

डॉ. जॉन ओसवाल्ट, किंग्स, सत्र 14, भाग 1 1 राजा 17-18, भाग 1--एलिय्याह का परिचय

© 2024 जॉन ओसवाल्ट और टेड हिल्डेब्रांट

राजाओं की पुस्तकों के हमारे अध्ययन के इस निरंतर सत्र में आपका स्वागत है।

आइए प्रार्थना से शुरू करें।

स्वर्गीय पिता, हम आपके पास खुशी के साथ आते हैं, यह जानते हुए कि आप सभी चीजों को अपने हाथों में रखते हैं, यह जानते हुए कि जब हम राजनीतिक संघर्ष, तनाव के दृश्यों को देखते हैं, तो आप नियंत्रण में हैं।

धन्यवाद। हम प्रार्थना करते हैं, पिता, कि जब हम आपकी पुस्तक के इस भाग का अध्ययन करेंगे तो आप हमारे हृदय में अपना कार्य करेंगे। हम प्रार्थना करते हैं कि आप हमारे विश्वास को नवीनीकृत करेंगे।

हम प्रार्थना करते हैं कि आप अपने लोगों में हमारा विश्वास फिर से जगाएं। हम प्रार्थना करते हैं कि आप हमारे आस-पास की दुनिया पर अपने नियंत्रण में हमारा विश्वास फिर से जगाएं। धन्यवाद।

इस अध्ययन के माध्यम से आपकी पवित्र आत्मा हममें से प्रत्येक से क्या कहना चाहती है, इसके लिए हमारे हृदय को खोल दें, और हम आपको धन्यवाद देंगे। आपके नाम में, आमीन।

हम उस विभाजन के दूसरे उपखंड पर आते हैं जिसे मैंने विभाजित राज्य का नाम दिया है।

विभाजित साम्राज्य पुस्तक 1, अध्याय 12 से पुस्तक 2, अध्याय 17 तक फैला हुआ है। यह दोनों पुस्तकों में प्रमुख विभाजन है। यह उपविभाजन पुस्तक के किसी भी भाग का सबसे बड़ा एकल विभाजन है।

क्षमा करें, मुझे कहना चाहिए कि यह पुस्तक के किसी भी भाग का सबसे बड़ा एकल उपखंड है। 40 वर्षों के साथ सुलैमान को 11 अध्याय मिले। लगभग 80 वर्षों को कवर करने वाले ये अध्याय पुस्तक 1, अध्याय 17 से पुस्तक 2, अध्याय 13 और लगभग 80 वर्षों को समर्पित 19 अध्याय हैं।

ध्यान दें कि सुलैमान की मृत्यु और एलिय्याह के आने के बीच के 55 वर्षों में केवल पाँच अध्याय हैं। ऐसा क्या है जो इन अध्यायों या इस विषय-वस्तु को इतने विस्तृत विवरण के योग्य बनाता है? यह यहोवा और बाल के बीच संघर्ष से संबंधित है। कई मायनों में, यह पूरी किताब का केंद्रीय संघर्ष है।

क्योंकि अगर उत्तरी राज्य यहोवा को त्यागकर बाल को अपना परमेश्वर बना लेता, तो निस्संदेह, यहूदा भी जल्द या बाद में ऐसा ही करता। और इसका परिणाम यह होता कि आज हमारे पास बाइबल नहीं होती। या अगर होती भी, तो वह बहुत अलग होती।

तो, बाल और यहोवा के बीच यह संघर्ष बिल्कुल महत्वपूर्ण है। यह दोनों पुस्तकों की संपूर्ण सामग्री का केंद्रीय भाग है। अध्याय 117 से 213 में स्पष्ट रूप से दो सेवकाईयों, एलियाह और एलीशा को शामिल किया गया है।

लेकिन वास्तव में, यह एक ही मंत्रालय है। एलीशा के मंत्रालय के अंतिम भाग तक बाल के साथ लड़ाई वास्तव में नहीं जीती जाती है। और हम देखेंगे, जैसे-जैसे हम किताबों को पढ़ते हैं, दोनों को कैसे मिलाया जाता है।

वे दो बहुत अलग-अलग व्यक्ति हैं, कुछ मायनों में लगभग एक दूसरे के विपरीत। लेकिन दूसरी ओर, यह एक ही मंत्रालय है। यह एक ही लक्ष्य है, एक ही मिशन है जिसका यहाँ पालन किया जा रहा है।

अब, इस भगवान, बाल के बारे में क्या? बाल, BAAL, या हिब्रू उच्चारण में, बाल, वायुमंडल का भगवान है। वह तूफान का भगवान है। वह बारिश का भगवान है।

वह उर्वरता और वनस्पति का देवता भी है, और इसलिए वह एक कनानी के मन में बहुत महत्वपूर्ण है। बेबीलोन और मिस्र दोनों में बड़ी नदियाँ थीं, जिनका उपयोग वे सिंचाई के लिए कर सकते थे। इसलिए, यह वास्तव में इतना मायने नहीं रखता था कि बारिश हुई या नहीं।

लेकिन कनान के लिए कोई बड़ी नदी नहीं है। हमारे दृष्टिकोण से जॉर्डन नदी नदी से ज़्यादा एक छोटी खाड़ी है। और यह रिफ्ट घाटी में थी, इसलिए उस पानी को किसी भी महत्वपूर्ण भूमि तक पहुँचाने का कोई तरीका नहीं था।

इसका मतलब यह था कि कनानवासी और फिर इस्राएली पूरी तरह से भूमध्य सागर से आने वाले तूफानों पर निर्भर थे। अगर वे तूफान पतझड़ में और फिर वसंत में अपने नियत समय पर नहीं आते हैं, तो लोग मर जाएँगे। इसलिए हमें एक ऐसे ईश्वर की ज़रूरत है जिसे हम नियंत्रित कर सकें, जिससे हम जो चाहें करवा सकें।

दूसरी ओर, यहोवा बेकाबू है। आप उस पर जादू नहीं कर सकते। वह इस दुनिया का हिस्सा नहीं है।

वह इस ब्रह्मांड से अलग है, और आप जादुई अनुष्ठान के ज़रिए उससे अपनी मर्ज़ी के मुताबिक कुछ नहीं करवा सकते। आप बस उस पर भरोसा कर सकते हैं। हे भगवान।

और फिर उसके सामने आत्मसमर्पण कर दो। हे भगवान। नहीं, नहीं, नहीं, नहीं, नहीं, नहीं, नहीं।

मैं एक ऐसे ईश्वर को चाहता हूँ जो इस दुनिया का हिस्सा है, जिसे मैं अपने हिसाब से ढाल सकता हूँ, जिससे मैं उसे आशीर्वाद दिलवा सकता हूँ। ध्यान दें कि यहोवा की हमारी पूजा कितनी बार मूर्तिपूजक होती है। हम सोचते हैं कि हम कुछ ऐसा कर सकते हैं जिससे वह हमें वह दे जो हम चाहते हैं।

यह सच नहीं है। और यही इस लड़ाई का मूल है। एक ईश्वर जिसके बारे में आपको लगता है कि आप अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए उसे नियंत्रित कर सकते हैं, और एक ईश्वर जिसे आप नियंत्रित नहीं कर सकते, और आपको अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए उस पर भरोसा करना होगा और उसके सामने समर्पण करना होगा।

तो, बाल, जैसा कि आप यहाँ स्क्रीन पर देख रहे हैं, बारिश का देवता है। आप देख सकते हैं कि पत्थर पर बारिश की परत चढ़ाई गई है। और उसके हाथ में एक पेड़ है।

लेकिन अगर आप इसके नीचे देखें, तो आप देख सकते हैं कि वहाँ एक बिंदु है। यह बिजली है। और उसके दूसरे हाथ में गदा है।

धमाका, बिजली। यह तूफान का देवता है। इसलिए, यह कोई दुर्घटना नहीं है कि यह घटना किस तरह से विकसित होती है।

हम अध्याय 17 में एलिय्याह का परिचय देखते हैं। और हम देखते हैं, बिलकुल शुरुआत में ही, वह विषय उभरने वाला है। एलिय्याह कहता है, अहाब, जब तक मैं न कहूँ, तब तक बारिश नहीं होगी।

अब, बेशक, एलिय्याह एक पल के लिए भी यह विश्वास नहीं करता कि उसके पास बारिश करने की शक्ति है। उसका वचन, एलिय्याह का वचन, यहोवा के वचन के समान ही होगा। और जब हम इस भाग, अध्याय 17, श्लोक 1 से 24 को देखते हैं, तो ध्यान दें कि कितनी बार परमेश्वर बोलता है या कब प्रभु के वचन का उल्लेख किया जाता है।

पद 2 में, प्रभु का वचन एलिय्याह के पास आया। पद 5 में, उसने वही किया जो प्रभु ने उससे कहा था। पद 8 में, प्रभु का वचन उसके पास आया।

फिर से, पद 14 में, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यही कहता है। फिर से, पद 16 में, एलिय्याह द्वारा कहे गए यहोवा के वचन के अनुसार। और अंत में, पद 24 में, अब मैं जानता हूँ कि तुम परमेश्वर के जन हो और तुम्हारे मुँह से निकला यहोवा का वचन सत्य है।

यहाँ जो बात कही जा रही है वह यह है कि यहोवा ही बोलने वाला ईश्वर है। बाल बोल नहीं सकता। हाँ, उसकी मूर्ति का मुँह तो है, लेकिन उससे कोई आवाज़ नहीं निकलती।

यहोवा के पास मुँह नहीं है, लेकिन वह बोल सकता है। बाइबल में यह विचार है कि परमेश्वर भाषा के रहस्यमय माध्यम से खुद को प्रकट कर सकता है। और इसलिए एलिय्याह कहता है, जब मैं बोलूंगा, तो यह परमेश्वर की आवाज़ होगी।

क्योंकि परमेश्वर मेरे माध्यम से बोल रहा है। आप और मैं उसकी आवाज़ सुन सकते हैं। आप और मैं उसके द्वारा निर्देशित और निर्देशित हो सकते हैं।

शायद एलिय्याह और एलीशा के अनुभवों के समान नाटकीय तरीके से नहीं, लेकिन फिर भी, हम उसे जान सकते हैं, उसे जीवित, बोलने वाले परमेश्वर के रूप में जान सकते हैं जो हमारे मार्गों को निर्देशित करता है और उन्हें आश्चर्यजनक रूप से निर्देशित करता है। अब हमारे पास इस अध्याय 17 में तीन चमत्कारी घटनाएँ हैं। सबसे पहले, उसे चेरीथ नदी पर भेजा जाता है।

यह नाला जॉर्डन नदी के दूसरी तरफ़ है, इसी इलाके में कहीं। यह एलीशा का गृह क्षेत्र भी है। वह गिलाद से है, जो इसी इलाके में है।

और इसलिए, भगवान उसे भेजते हैं और कहते हैं कि कौवे उसके लिए भोजन लाएंगे, और वह नाले से पानी पी सकता है। फिर हमारे पास तेल का चमत्कार है जो बंद नहीं होता, फूल जो बंद नहीं होते। और तीसरा, हमारे पास विधवा के बेटे को वापस जीवित करने का चमत्कार है।

अब, यहाँ क्या हो रहा है? कई विद्वान इस पूरे खंड को केवल भविष्यवक्ताओं की किंवदंतियों के रूप में देखते हैं, और हमारे पास चमत्कारों से जुड़ी ये सारी बातें इसलिए हैं क्योंकि यह पौराणिक है, और लोग किंवदंतियाँ बनाते समय आश्चर्यजनक कहानियाँ सुनाना पसंद करते हैं। मुझे नहीं लगता कि ऐसा बिल्कुल भी है। वास्तव में, एलिजा-एलीशा की कहानी में, राजाओं की पूरी किताब में जितने चमत्कार हैं, उससे कहीं ज़्यादा चमत्कार हैं।

कुछ मायनों में, यह व्यवस्थाविवरण के शेष भाग में यहोशू से लेकर राजाओं तक है। क्या हो रहा है? वही बात जो यीशु की कहानियों में हो रही है। फिर से ध्यान दें कि जब आप प्रेरितों से निपटते हैं, तो उनके पास स्पष्ट रूप से कुछ चमत्कार करने की क्षमता थी।

हमें बताया गया है कि शिष्यों में दुष्टात्माओं को निकालने की क्षमता थी। लेकिन कुल मिलाकर, जब आप सुसमाचारों से आगे बढ़ते हैं, तो आपको बहुत अधिक चमत्कार नहीं दिखते। आप पॉल को मुख्य रूप से चमत्कार करने वाले के रूप में नहीं देखते।

आप उन्हें एक उपदेशक और शिक्षक के रूप में देखते हैं। क्या हो रहा है? ये क्षण हैं, संकट के क्षण, ऐसे क्षण जब सब कुछ इस बात पर टिका हुआ है कि यीशु की सेवकाई में, एलिय्याह और एलीशा की सेवकाई में क्या होता है। कई चमत्कारों का एक और दौर था निर्गमन।

मुझे सीएस लुईस की कही बात बहुत पसंद है। वे कहते हैं कि चमत्कार वे चिंगारियाँ हैं जो तब उठती हैं जब रहस्योद्घाटन का इस्पात समय के घूमते पहिये पर प्रहार करता है। क्या यह अच्छा नहीं है? हाँ, भगवान इन संकट के समय में खुद को विशेष रूप से प्रकट कर रहे हैं।

वह मिस्र में खुद को प्रकट कर रहा है। वह अब बाल के साथ संघर्ष में खुद को प्रकट कर रहा है। और वह खुद को चरमोत्कर्ष पर और अंततः यीशु में प्रकट कर रहा है।

तो, ये चमत्कार सिर्फ लोगों की पौराणिक रचनाएँ नहीं हैं। दरअसल, ये उन चीजों की अभिव्यक्तियाँ हैं जो घटित हुईं। अब हम चमत्कारों में एक तरह की प्रगति देखते हैं।

हम कुछ हद तक प्राकृतिक अर्थों में भोजन और पानी से शुरुआत करते हैं। ठीक है, कौवे इसे ला रहे हैं, लेकिन कौवे इसे ढूँढ़कर ला सकते हैं। तो हाँ, और पानी धारा में है।

लेकिन फिर पानी खत्म हो जाता है, और परमेश्वर एलिय्याह से कुछ अद्भुत करने को कहता है। वह उसे वहाँ से गिलियड में जहाँ भी वह है, वहाँ जाने को कहता है।

वह उसे भूमि पार करके फोनीशियन के क्षेत्र में सारफत गांव तक जाने के लिए कहता है। क्या आप इसे वहाँ देखते हैं? टायर और सिडोन के बीच लगभग आधे रास्ते पर, एक लंबी दूरी, लगभग सौ मील की दूरी पर, अगर आप कहें तो दुश्मन देश से होकर एक ऐसे गांव में जो वास्तव में इजरायल का हिस्सा नहीं है। यह विश्वास का एक बड़ा कदम है कि आप उस भूमि पर जाएं जो आपकी मातृभूमि नहीं है, ऐसी जगह पर जाएं जहाँ संभवतः वह पहले कभी नहीं गया हो, किसी ऐसे व्यक्ति से मिलें जिससे वह पहले कभी नहीं मिला हो, और एक विधवा के पास जाएं।

अब, विधवा, कई मायनों में, देश की सबसे गरीब महिला है। उसके पास कोई पति नहीं है जो उसका भरण-पोषण करे या उसकी देखभाल करे। कई मायनों में, यह पागलपन है।

और मुझे लगता है कि हम सभी जिन्होंने प्रभु की इच्छा का पालन किया है, उन्होंने इस तरह की चीजों का अनुभव किया है। भगवान, इसका कोई मतलब नहीं है। लेकिन यह बात है।

इसकी शुरुआत अब्राहम से होती है। हमें परमेश्वर पर सच्चा भरोसा करने के लिए बार-बार खुद की देखभाल करने की अपनी किसी भी क्षमता से दूर रहना होगा। यह भयावह है।

लेकिन मैं इस बारे में लगातार बकबक कर सकता हूँ कि मैं भगवान पर कैसे भरोसा करता हूँ, जबकि वास्तव में, मैं खुद की देखभाल करने और अपनी ज़रूरतों को पूरा करने की अपनी क्षमता पर भरोसा करता हूँ। जब भगवान हमें आगे बढ़ने के लिए बुलाते हैं, तब हमें पता चलता है कि क्या हम वास्तव में उन पर भरोसा करते हैं। और इसलिए, वह विधवा के पास आते हैं, जो जब उनसे पानी माँगती है, तो बहुत दयालुता से, उदारता से पानी लेने जाती है।

और वह कहता है, ओह, वैसे, मुझे खाने के लिए कुछ खाने का टुकड़ा लाओ। और वह कहती है, श्रीमान, मेरे पास तेल की आखिरी बूँद और आटे के कुछ टुकड़े बचे हैं। मैं इन्हें पकाने के लिए आग जलाने के लिए लकड़ियाँ इकट्ठा कर रही हूँ, उन्हें मुझे और मेरे बेटे को दे दो, और हम उन्हें खाएँगे और मर जाएँगे।

उसने कहा, " डरो मत । घर जाओ और जैसा तुमने कहा है वैसा करो । लेकिन पहले, जो कुछ तुम्हारे पास है उसमें से मेरे लिए एक छोटी रोटी बनाकर मेरे पास ले आओ।"

ऊपर से दान दें और फिर देखें कि क्या बचा है। कैरन और मेरे अनुभव में, यह दशमांश का सिद्धांत है। अब, जॉन वेस्ले ने बहुत अच्छी तरह से कहा है कि 10% नियम पुराने नियम का हिस्सा है।

आपका सारा पैसा भगवान का है। एकमात्र सवाल यह है कि आप इसमें से कितना पैसा खुद पर खर्च करने जा रहे हैं? 10% का दशमांश देना एक अच्छी शुरुआत है। लेकिन समस्या यह है।

अगर आप महीने के अंत तक भगवान को अपना चढ़ावा चढ़ाने का इंतज़ार करेंगे, तो आपके पास देने के लिए कुछ नहीं बचेगा। वह सब खत्म हो जाएगा। भगवान को अपना चढ़ावा चढ़ाने से पहले ही उसे चढ़ा दें।

और आप आश्चर्यचकित होंगे कि महीने के बाकी दिनों में आपका पैसा कितना आगे तक जाता है। अब, मैं इसे समझा नहीं सकता, लेकिन यह एक सिद्धांत है। यह ऐसी चीज़ नहीं है जिस पर आप दांव लगा सकें।

ठीक है, भगवान, मैं तुम्हें यह भेंट देने जा रहा हूँ, और तुम बेहतर उत्पादन करोगे। यह रास्ता विनाश का रास्ता है। भगवान को हेरफेर नहीं किया जा सकता।

भगवान को ब्लैकमेल नहीं किया जा सकता। लेकिन एलिजा कहते हैं, जो तुम्हारे पास है, मुझे दे दो और फिर देखो कि क्या बचता है। और देखो, आपूर्ति का चमत्कार।

तेल जिसने फूल को नहीं रोका जो नहीं रुका। और फिर तीसरा चमत्कार है, जीवन और मृत्यु। क्या आप समझ रहे हैं कि मैं प्रगति के बारे में क्या कह रहा हूँ? मुझे लगता है कि ईश्वर, कई तरीकों से, एलिय्याह को अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर रहा है, जितना कि कोई और कर सकता है।

एलिय्याह, मेरे पास कौवों पर अधिकार है। एलिय्याह, मेरे पास जीवन की बुनियादी चीज़ों पर अधिकार है। एलिय्याह, मेरे पास जीवन और मृत्यु पर भी अधिकार है।

और इसलिए, छोटा लड़का मर जाता है। और माँ कहती है, तुम यहाँ आए, तुम मुझे मेरे पापों का दोषी ठहराने आए और इसी वजह से मेरे बेटे को मार डाला। बेशक, शैतान इसी तरह काम करता है।

जब कोई विपत्ति आती है, तो हम कहते हैं, ओह, किसी तरह मैंने इसे अर्जित किया है। किसी तरह यह मेरे पाप के कारण हुआ है। यही वह बात है जिसके लिए सांत्वना देने वालों ने अय्यूब को दोषी ठहराने की कोशिश की।

ओह, जीवन उससे कहीं ज़्यादा जटिल है। लेकिन यह उसकी स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। और एलिय्याह कहता है, हे प्रभु परमेश्वर, क्या तूने इस विधवा पर भी विपत्ति ला दी है जिसके साथ मैं रह रहा हूँ? परमेश्वर में विश्वास का मतलब यह नहीं है कि हमारे पास सवाल नहीं हैं।

ईश्वर में आस्था रखने का यह मतलब नहीं है कि हमारे जीवन में निराशा और अनिश्चितता के क्षण नहीं आते। लेकिन देखिए एलिय्याह ने क्या किया। वह तीन बार लड़के के ऊपर लेट गया और प्रभु से प्रार्थना की, हे यहोवा, मेरे परमेश्वर, इस लड़के को जीवन वापस दे।

और उसने ऐसा किया। यह एक ऐसा परमेश्वर है जिसके पास सारी शक्ति है। यह एक ऐसा परमेश्वर है जो जीवन के हर हिस्से को छूने और उसमें और उसके ज़रिए हमें छुड़ाने में सक्षम है।

अब, इस भाग को छोड़ने से पहले एक और बात, ध्यान दें कि एलिय्याह को क्या कहा जाता है। उसे भविष्यवक्ता नहीं कहा जाता। बल्कि उसे परमेश्वर का जन कहा जाता है।

दिलचस्प बात यह है कि महिला ने उसका वर्णन इस तरह किया है। पद 18 में, वह एलिय्याह से कहती है, परमेश्वर के जन, मुझ से तुम्हारा क्या विरोध है? और फिर, अंत में, वह कहती है, मैं जानती हूँ कि तुम परमेश्वर के जन हो। ध्यान दें कि तुम्हारे मुँह से प्रभु का वचन सत्य है।

हाँ, हाँ। इसीलिए मैं इस अध्याय को एलिय्याह का परिचय कहता हूँ।

यह हमें बताता है कि यह आदमी कौन है। वह ईश्वर का आदमी है। और मैं आपको यह सुझाव देना चाहता हूँ कि यह पैगम्बर के नीचे है। पैगम्बर एक पेशा है।

पैगंबर एक भूमिका है। ईश्वर का आदमी एक चरित्र, एक स्वभाव, एक अस्तित्व है। आप और मैं पैगंबर या भविष्यवक्ता नहीं हो सकते हैं, लेकिन हम ईश्वर के पुरुष और महिला हो सकते हैं।

यह भविष्यवक्ता होने से ज़्यादा महत्वपूर्ण है। वह परमेश्वर का आदमी है। इस पूरे भाग में, एलिय्याह और एलीशा को मुख्य रूप से परमेश्वर के आदमी के रूप में संदर्भित किया जाएगा।

क्या वे राष्ट्रों को परमेश्वर का वचन सुनाने वाले भविष्यद्वक्ता की भूमिका निभाते हैं? हाँ, हाँ। लेकिन इससे भी ज़्यादा गहरा है उनका चरित्र, वे कौन हैं, परमेश्वर के साथ उनके संबंध क्या हैं। यही वह मुद्दा है जो हमारे सामने है।

तो, अध्याय 17 एलिय्याह का परिचय देता है।